आज का इतिहास

- **1897:** स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।
- **1908:** स्वतन्त्रता सेनानी प्रफुल्लचंद चाकी ने मुजफ्फरपुर बम कांड को अंजाम देने के बाद खुद को गोली मारी।
- **1913:** प्रसिद्ध हिन्दी फिल्म अभिनेता बलराज साहनी का जन्म।
- **1920:** प्रसिद्ध गायक मन्ना डे का जन्म।
- **1945:** सोवियत रेड आर्मी का बर्लिन में प्रवेश।
- **1960:** बंबई प्रांत का महाराष्ट्र और गुजरात में विभाजन।
- **1984:** फू दोरजी बिना ऑक्सीजन के माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने में सफल।
- **1993:** श्रीलंका के राष्ट्रपति रणसिंघे प्रेमदास की बम विस्फोट में मृत्यु।
- **1999:** नेपाल में मृत्युदंड की सजा समाप्त।
- **2000:** अंतर्राष्ट्रीय अन्तर-संसदीय संघ ने पाकिस्तान, आइवरी कोस्ट व सूडान को देश की संसद भंग करने के लिए संघ की सदस्यता से निलंबित किया।
- **2001:** लश्कर-ए-तैयबा व जैश-ए-मोहम्मद संयुक्त राज्य अमेरिका में आतंकवादी संगठन घोषित।
- **2002:** अमेरिका की अपील पर इस्रायल ने हेब्रोन से सेना हटाई।
- **2004:** यूरोपीय संघ में 10 नये राष्ट्र शामिल।
- **2005:** सद्दाम हुसैन ने सशर्त रिहाई की अमेरिकी पेशकश ठुकराई।
- **2008:** बेलारूस ने 10 अमेरिकी राजनयिकों को देश छोड़ने का आदेश दिया।
- **2008:** गांधीवादी विचारधारा से जुड़ी हुई प्रसिद्ध महिला सामाजिक कार्यकर्ता निर्मला देशपांडे का निधन।
- **2011:** अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा ने घोषणा की कि 11 सितंबर के धमाकों का मास्टरमाइंड ओसामा बिन लादेन मारा गया।

कविता

मैं मजबूर नहीं, मजदूर हूं

नदियों को रोककर, बांध मैंने बनाए।
सुई से लेकर यान मैंने बनाए।
क्योंकि मैं.....
मैंने चट्टानों को तोड़ा।
मैंने ही नदियों को जोड़ा।
क्योंकि मैं.....
मेरे परिश्रम से खुलता है, दुनिया की किस्मत का ताला।
लेकिन मुश्किल से मिलता है, मुझे दो वक्त का निवाला।
किले,महल सब मैंने बनाए।
पर्यटक देखकर मन हर्षाए। **क्योंकि मैं....**
राष्ट्र के निर्माण में मेरा बड़ा योगदान।
दुर्भाग्य से मुझे आज तक नहीं मिला सम्मान।
विश्राम,आलस्य और निराशा, मेरी डिक्शनरी में नहीं होते।
मैं परिश्रम नहीं करता,तो धरती पर कोई निर्माण नहीं होते। **क्योंकि मैं....**
मेरे नाम पर एक मई को, मजदूर दिवस मनाया जाता है।
सत्ताधीशों के द्वारा करोड़ों की योजनाओं का पिटारा खोला जाता है।
हर निर्माण की नींव मेरे पसीने से सिंचित है।
फिर भी मेरी पीढ़ी अधिकारों से वंचित है।
मेरे दिल से निकली हर दुआ सच्ची होती है।
समाज व सरकार की नियत मेरे लिए हमेशा कच्ची होती है।
अपने सपने पूरे करने, औरों के सपने पूरे करता हू।
समय का मुझको ज्ञान नहीं मैं दिन- रात परिश्रम करता हूं। **क्योंकि मैं....**
अक्सर मेरी चर्चा होती है, सत्ता के गलियारों में ।
उनके घर नोटों की वर्षा, मुझे पानी भी मिलता बौछारों में।
नेताओं को छींक भी आए, डॉक्टरों की लाइन लग जाती है।
यदि मैं बीमार हुआ तो, अस्पताल की लाइन में लगे-लगे मौत हो जाती है। **क्योंकि मैं....**
ऐसा कोई निर्माण नहीं जो मेरे बगैर हो जाए। मशीनें भी थम जाती हैं जब मजदूर का हाथ रुक जाए।
समाज के नव निर्माण का मैं ही आधार हूं।
विकास की मुख्य धारा से दूर मैं निराधार हूं।
क्योंकि मैं मजबूर नहीं, मजदूर हूं।

■ राजकुमार दीक्षित

आखिर कैसे सुधरेगी मजदूरों की स्थिति?

मजदूर दिवस यानि मजदूरों का दिन। कहने और सुनने में कितना शकुन देता है यह शब्द। लेकिन इस शब्द के मायने, शायद उन मजदूरों के लिए कुछ भी नही जिनके नाम पर इसे दुनिया में मनाया जा रहा है। वो बेचारे तो इस दिन भी अपनी रोजी - रोटी के लिए कमर तोड़ पसीना बहा रहे होते हैं। यदि नहीं बहाएंगे तो उनका परिवार भूखा ही सोएगा। फिर कैसा मजदूर दिवस, किसका मजदूर दिवस? दिन रात रोजी-रोटी के जुगाड़ में जद्दोजहद करने वाले मजदूर के लिए पेट और परिवार की मजबूरी में हर दिवस छोटा होता है। उसे तो दो वक्त की रोटी मिल जाए मानों सब कुछ मिल गया। आजादी के इतने साल में भले ही बहुत कुछ बदला हो, लेकिन नहीं बदले तो सिर्फ मजदूरों के हालात। तो फिर क्यों मनाए मजदूर दिवस?

दुनिया भर में प्रतिवर्ष 1 मई को मजदूर दिवस यानी अंतर्राष्ट्रीय श्रम दिवस के रूप में मनाया जाता है, जिसे मई दिवस भी कहा जाता है। मई दिवस समाज के उस वर्ग के नाम किया गया है, जिसके कंधों पर सही मायनों में विश्व की उन्नति का दारोमदार है। इसमें कोई दो राय नहीं कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति एवं राष्ट्रीय हितों को पूरा करने का प्रमुख भार मजदूर वर्ग के कंधों पर ही होता है। मजदूर वर्ग की कड़ी मेहनत के बल पर ही राष्ट्र की प्रगति का चक्र तेजी से घुमता है, लेकिन कर्म को ही पूजा समझने वाला श्रमिक वर्ग श्रम कल्याण सुविधाओं के लिए आज भी तरस रहा है। वैश्वीकरण और मुनाफे की अंधी दौड़ में मजदूरों का शोषण आज भी जारी है। प्रतिदिन आठ घंटे और सप्ताह में 40 घंटे कामकाज, उचित पारिश्रमिक और बेहतर माहौल जैसी मांगों को लेकर शुरू हुआ मजदूरों का संघर्ष आज भी जारी है। यही वजह रही है कि मजदूर दिवस जैसे आयोजन अब इस तबके को बेमानी से लगने लगे हैं।

मजदूरों का खुलेआम शोषण

आज भी देश का शायद ही ऐसा कोई हिस्सा हो जहां मजदूरों का खुलेआम शोषण न होता हो। आज भी स्वतंत्र भारत में बंधुआ मजदूरों की बहुत बड़ी तादाद है। कोई ऐसे मजदूरों से पूछकर देखे कि उनके लिए देश की आजादी के क्या मायने हैं ? जिन्हें अपनी मर्जी से अपना जीवन जीने का ही अधिकार न हो, जो दिनभर की हाड़तोड़ मेहनत के बाद भी अपने परिवार का पेट भरने में सक्षम न हो पाते हों। उनके लिए क्या आजादी और क्या गुलामी? सबसे बदतर स्थिति तो बाल एवं महिला श्रमिकों की है। बच्चों व महिला श्रमिकों का आर्थिक रूप से तो शोषण होता ही है, उनका शारीरिक रूप से भी जमकर शोषण किया जाता है। अपना और अपने बच्चों का पेट भरने के लिए चुपचाप सब कुछ सहते रहना इन बेचारों की जैसे नियति बन गयी है।

सिर्फ कागजी तक सीमित

समय बीतने के साथ मजदूरों के आत्म सम्मान का दिवस कहा जाने वाले मजदूर दिवस को लेकर श्रमिक तबके में अब कोई खास उत्साह नहीं रह गया है। बढ़ती महंगाई और पारिवारिक जिम्मेदारियों ने भी मजदूरों को उत्साह से दूर कर दिया है। बच्चों के सुनहरे भविष्य के सपने संजोकर पराए प्रदेश में जाकर हाड़-तोड़ मेहनत करने के बावजूद तिल-तिल सिसकती जिंदगी जी रहे इन मेहनतकश मजदूरों के लिए अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस जैसे आयोजन कोई मायने नहीं रखते हैं।

हितों की रक्षा के लिए दावे

मजदूर तबका यह अच्छी तरह से जानता है कि इस दिन हर साल की तरह उनके हितों की रक्षा के लिए दावे किए जाएंगे और दलीलें दी जाएंगी। लेकिन साल भर जब यह तबका नौकरी के लिए संघर्ष करता है, या नौकरी मिल जाए तो पगार लेने के लिए जद्दोजहद और फिर कम पगार में घर चलानें की चुनौतियों से जुझता है, तो कोई भी संगठन सही मायने में इनके लिए आगे नहीं आता। यहां का मजदूर एक अदद छत, उचित वेतन व अन्य मूलभूत सुविधाओं के अभाव में गुजर-बसर करने को मजबूर है।

बढ़ती महंगाई और पारिवारिक जिम्मेदारियों ने भी मजदूरों को उत्साह से दूर कर दिया है।

गुलामो जैसा जीवन

मजदूर दिवस पर देशभर में बड़ी-बड़ी सभाएं, सेमीनार आयोजित किए जाते हैं, जिनमें मजदूरों के हितों की बड़ी-बड़ी योजनाएं बनती हैं और ढेर सारे लुभावने वायदे किए जाते हैं। सरकारे समाचार पत्रो में मजदूरो के हित की योजनाओं के बड़े-बड़े विज्ञापन जारी करती है जिन्हें देख सुनकर एक बार तो यही लगता है कि मजदूरों के लिए अब कोई समस्या बाकी नहीं रहेगी। लोग इन खोखली घोषणाओं पर तालियां पीटकर अपने घर लौट जाते हैं किन्तु अगले ही दिन मजदूरों को पुनः उसी माहौल से रूबरू होना पड़ता है। मजदूरो को फिर वही शोषण, अपमान व जिल्लत भरा गुलामो जैसा जीवन जीने के लिए अभिशप्त होना पड़ता है।

उपयोगिता समझना मुश्किल

कैसे बदले मजदूरो के हाल कैसे बदले उनकी दशा और दिशा। मजदूरों का ना सामाजिक स्तर बदला, ना शिक्षा का स्तर बदला। जिंदगी लगातार उसी ढर्रे पर चल रही है। डॉक्टर का बेटा डॉक्टर, वकील का बेटा वकील मास्टर का बेटा मास्टर तो क्या मजदूर के बच्चे मजदूर ही रहेंगे। रोटी, कपड़ा और मकान के लिए जूझते इस श्रमिक वर्ग के लिए इस मजदूर दिवस की कितनी उपयोगिता है इसे समझना बहुत मुश्किल नहीं है। यह भी स्पष्ट है कि पूंजीवादी बाजार और सत्ता इस मजदूर दिवस को कितना महत्व देते हैं।

मालिकों के मनमाने रवैये पर कोई लगाम नहीं

जहां तक मजदूरों द्वारा अपने अधिकारों की मांग का सवाल है तो मजदूरों के संगठित क्षेत्र द्वारा ऐसी मांगों पर उन्हें अक्सर कारखानों के मालिकों की मनमानी और तालाबंदी का शिकार होना पड़ता है। सरकार कारखानों के मालिकों के मनमाने रवैये पर कभी भी कोई लगाम लगाने की चेष्टा इसलिए नहीं करती क्योंकि चुनाव का दौर गुजरने के बाद उसे मजदूरों से तो कुछ मिलने वाला होता नहीं है। चुनाव फंड के नाम पर सभी राजनीतिक दलों को चन्दे के रूप में मोटी-मोटी थैलियां इन्हीं कारखानों के मालिकों से ही मिलती हैं।

रोजी-रोटी की तलाश का संकट

देश के सभी राजनीतिक दलों ने अपने यहां मजदूर मार्चा बना रखा। सभी दल दावा करते हैं कि देश में उनके दल से बड़ी कोई पार्टी नहीं है जो मजदूरो के भले के लिये काम करती है। मगर ये सिर्फ कहने सुनने में अच्छा लगता है हकीकत इससे कहीं उलट है। जहां तक मजदूर संगठनों के नेताओं द्वारा मजदूरों के हित में आवाज उठाने की बात है तो आज के दौर में अधिकाश ट्रेड यूनियनों के नेता भी भ्रष्ट राजनीतिक तंत्र का हिस्सा बने हैं। देश में बहुराष्ट्रीय कम्पानियों के फैलते जाल से भारतीय उद्योगों के अस्तित्व पर वैसे ही संकट मंडरा रहा है और ऐसे में मजदूरों के लिए रोजी-रोटी की तलाश का संकट और भी विकराल होता जा रहा है। मजदूर दिवस के दिन कई जगह मजदूरों के झुंड एकत्रित कर रैलियां निकाली जाएंगी। ऐसा नहीं है कि हमारे दर्शन में मजदूरों के लिए कोई सन्देश नहीं है पर उसमें मनुष्य में वर्गवाद के वह मन्त्र नहीं है।

■ रमेश सर्राफ धमोरा

रिटायरमेंट की योजना में इन 5 गलतियों से बचें...

वृद्धावस्था में आर्थिक सुरक्षा के अभाव और छोटे परिवारों के बढ़ते चलन ने आज रिटायरमेंट के बाद पर्याप्त बचत पूंजी का महत्व बढ़ा दिया है। हालांकि आपकी रिटायरमेंट पूंजी कितनी होगी, यह इस बात पर निर्भर करती है कि आप आज अपने पैसों की व्यवस्था किस तरह करते हैं। आइए हम उन 5 गलतियों को जानें, जिनसे हमें रिटायरमेंट की योजना बनाने के दौरान बचना चाहिए।

रिटायरमेंट पूंजी का कम आंकलनः बहुत से लोग रिटायरमेंट के बाद की जरूरत के लिए अपनी बचत पूंजी को कम करके आंकते हैं। वे अक्सर महंगाई की दर की अनदेखी करते हैं। महंगाई बढ़ने से पैसे का मूल्य घटता है और सेवाओं एवं वस्तुओं का मूल्य बढ़ता है। यदि आप रिटायरमेंट के बाद के खर्चों का कम आंकलन करते हैं तो अपनी सेवानिवृत्ति की राशि में कम पैसे जोड़ेंगे। इससे आपके रिटायरमेंट जीवन में आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ सकता है और अपने दैनिक खर्चों को पूरा करने के लिए उस समय काम भी करना पड़ सकता है। इसलिए अपने मासिक निवेश के लिए ऑनलाइन रिटायरमेंट केलकुलेटर की मदद लें ताकि आप महंगाई की दर और आपकी राशि पर मिलने वाले रिटर्न को ध्यान में रखते हुए पर्याप्त रिटायरमेंट पूंजी जुटा सकें।

■ जल्दी शुरुआत ना करना

हम अक्सर ऐसी मुश्किलों की अनदेखी करते हैं, जिनसे निकट भविष्य में सामना होने की संभावना नहीं होती है। इसका नतीजा यह होता है कि हम 50 की उम्र पर पहुंचने के बाद ही रिटायरमेंट के लिए बचत करना शुरू करते हैं। याद रखें, आप जितनी जल्दी शुरुआत करेंगे कंपाउंडिंग या चक्र वृद्धि का उतना ही अधिक लाभ मिलेगा, यानि आपके मूल निवेश पर आपको ज्यादा से ज्यादा ब्याज मिलेगा। यदि लंबे समय तक निवेश जारी रखते हैं तो आपके पास एक बड़ी रिटायरमेंट पूंजी जमा हो जाती है। उदाहरण के लिए यदि 25 साल की उम्र में आप 1,555 रु. प्रति माह व्यवस्थित निवेश योजना में लगाते हैं तो आपको 12 प्रतिशत की दर से 35 वर्ष बाद एक करोड़ रु. की राशि मिलेगी। लेकिन यदि आप 50 साल की उम्र में निवेश शुरू करेंगे तो आपको 60 साल की उम्र तक इतनी ही राशि इकट्ठा करने के लिए 43,471 रु. प्रति माह का निवेश करना होगा।

स्वास्थ्य बीमा की अनदेखी

आज स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े खर्च जिस तरह से बढ़ रहे हैं वह भविष्य में कई गुना और बढ़ जाएंगे। मेडिकल साइंस में हो रहे विकास के साथ-साथ औसत जीवन काल भी बढ़ गया है। इसके चलते भविष्य में इलाज का खर्च भी बढ़ेगा। जब आप अपने रिटायरमेंट के पड़ाव पर पहुंचेंगे तो वृद्धि उम्र से जुड़ी अनेक बीमारियां आपके जेब पर भारी पड़ सकती हैं। इससे आप की सेवानिवृत्ति की राशि पर अतिरिक्त खर्च का बोझ बढ़ जाएगा। अपने इलाज के लिए आपको ऊंची ब्याज दर पर लोन भी लेना पड़ सकता है। इस स्थिति को टालने का सबसे अच्छा और एकमात्र उपाय यही है कि आप अपने मेडिकल और अस्पताल के खर्च को कवर करने के लिए एक उपयुक्त हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी खरीदें। आप जल्द से जल्द ऐसी पॉलिसी खरीद लें ताकि कुछ विशेष प्रकार की सर्जरी, विभिन्न इलाज, पहले से मौजूद बीमारी आदि को कवर करने के लिए लगने वाला वेटिंग पीरियड (प्रतीक्षा समय) आप पूरा कर सकें। स्वास्थ्य बीमा पॉलिसी जल्दी खरीदने पर आपको लॉयल्टी या नो-क्लेम बोनस भी मिलता है, जिससे आपकी बीमा राशि भी बढ़ जाती है।

इक्विटी से बचकर रहना

ज्यादातर लोग सिर्फ निवेश के पारंपरिक तरीके अपनाने की गलती करते हैं और बेहद सीमित ढंग से अपने रिटायरमेंट के लिए निवेश करते हैं। निवेश के लिए आमतौर पर फिक्स डिपाजिट, किसान विकास पत्र, नेशनल सेविंग सर्टिफिकेट, एंडोमेंट पॉलिसी आदि का सहारा लिया जाता है। लेकिन उसमें रिटर्न की दर अक्सर महंगाई की दर को मात देने में नाकाम रहती है। चूंकि रिटायरमेंट की प्लानिंग एक लंबी अवधि की योजना होती है, जिसमें अमूमन कुछ दशक का समय होता है, ऐसे में शेयर यानि इक्विटी में निवेश करना उपयुक्त माना जाता है क्योंकि यहां लंबी अवधि में आपको अच्छा लाभ मिल जाता है। अपने लिए एक पर्याप्त रिटायरमेंट निधि इकट्ठी करने के लिए इक्विटी म्यूच्यूअल फंड्स में भी निवेश करें और जैसे-जैसे आपके रिटायरमेंट की उम्र करीब आती है तो आप धीरे-धीरे अपनी रिटायरमेंट पूंजी को इक्विटी फंड से निकालकर एक सिस्टमैटिक ट्रांसफर प्लान के जरिये कम जोखिम वाले फंड में लगाएं।

निवेश पोर्टफोलियो से की समीक्षा ना करना

अच्छे रिटर्न प्रदान करने का इतिहास रखने वाली म्यूच्यूअल फंड योजनाएं अक्सर लंबे समय में नाउम्मीद कर देती हैं। इसके लिए यह जरूरी है कि आप समय-समय पर अपने रिटायरमेंट से जुड़े निवेश की समीक्षा करते रहें। बीती 8 से 12 तिमाही के दौरान आपके म्यूच्यूअल फंड पर मिले रिटर्न की सूची बनाएं, और निवेश के समकक्ष माध्यमों और बेंचमार्क सूचकांक से उनकी तुलना करें। यदि अन्य निधियों और बेंचमार्क सूचकांक की तुलना में आपके म्यूच्यूअल फंड का प्रदर्शन तीन से चार तिमाही तक कमतर रहा है तो आप अपने म्यूच्यूअल फंड से राशि निकाल लें।

■ नवीन कुकरेजा